सत्यश्रवा आत्रेयः।उषाः। पङ्क्तिः ।

महे नो अद्य बोधयोषो राये दिवित्मती।

यथा चिन्नो अबोधयः सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते॥ ५.०७९.०१

यथा। पूर्वम्। वाय्ये- तन्तुसमाने। सत्यश्रवसि- अतीन्द्रियसत्यश्रवणे। अबोधयः- बोधितवती। तथा। अद्यापि। नः- अस्मान्। सुजाते- सुष्ठूद्भूते। अश्वसूनृते- व्याप्तप्रियहितवाग्भूते। दिवित्मती- दिव्या सती। उषः- प्रभाति विद्ये। महे- महत्यै। राये- सम्पदे। नः- अस्मान्। बोधय ॥१॥

या सुनीथे शौचद्रथे व्यौच्छो दुहितर्दिवः।

सा व्युच्छ सहीयसि सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते॥ ५.०७९.०२

सुनीथे- शोभननयने। शोचद्रथे- ज्वलद्रथे। दिवो दुहितः- दिव्ये। या। व्यौच्छः- तमांसि व्यवासयः। सा। सहीयसि- सहनशीले। सुजाते। अश्वसूनृते। वाय्ये। सत्यश्रवसि। व्युच्छ- तमांसि विवासय ॥२॥

सा नो अद्याभरद्वसुर्व्युच्छा दुहितर्दिवः।

यो व्यौच्छः सहीयसि सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते॥ ५.०७९.०३

आभरद्वसुः- सम्पत्सम्पादयित्रि। दिवो दुहितः- दिव्ये। अद्य- इदानीम्। नः- अस्मदर्थम्। व्युच्छ- तमो विवासय ॥३॥

अभि ये त्वा विभावरि स्तोमैर्गृणन्ति वह्नयः।

मघैर्मघोनि सुश्रियो दामन्वन्तः सुरातयः सुजाते अश्वसूनृते॥ ५.०७९.०४

मघोनि- हे सम्पद्वति। सुजाते। अश्वसूनृते। विभावरि- प्रकाशयुक्ते। ये। त्वा- त्वाम्। वह्नयः- वोढार उपासकाः। स्तोमैः- मन्त्रैः। अभि- आभिमुख्येन। गृणन्ति- स्तुवन्ति। ते। सुश्रियः- सुमङ्गळाः। मघैः- सम्पद्भिः। दामन्वन्तः- दानवन्तः। सुरातयः- शोभनदानाश्च भवन्ति ॥४॥

यच्चिद्धि ते गणा इमे छदयन्ति मघत्तये।

परि चिद्वष्टयो दधुर्ददतो राधो अह्रयं सुजाते अश्वसूनृते॥ ५.०७९.०५

सुजाते। अश्वसूनृते। मघत्तये- सम्पद्दानाय। यच्चित्- ये केचित्। हि- खलु। ते- तव। इमे- एते। गणाः। छदयन्ति- उपच्छन्दयन्ति। ते- वष्टयः- कामयमानाः। अह्रयम्- अकुटिलाम्। राधः- संसिद्धिम्। ददतः- यच्छन्तः। परि दधुः- परितो धारयन्ति ॥५॥

ऐषु धा वीरवद्यश उषो मघोनि सूरिषु।

ये नो राधांस्यह्रया मघवानो अरासत सुजाते अश्वसूनृते॥ ५.०७९.०६

ये। नः- अस्मभ्यम्। अह्रया- अकुटिलाः। राधांसि- संसिद्धीः। मघवानः- धनवन्तः। अरासत- ददुः। सुजाते। अश्वसूनृते। एषु- तेषु। मघोनि- सम्पद्वति। सूरिषु- मेधाविषु। वीरवत्- वीर्ययुक्तम्। यशः। आ- आभिमुख्येन। धाः- धारयसि ॥६॥

तेभ्यो द्युम्नं बृहद्यश उषो मघोन्या वह।

ये नो राधांस्यश्व्या गव्या भजन्त सूरयः सुजाते अश्वसूनृते॥ ५.०७९.०७

ये। नः- अस्मभ्यम्। अश्व्या- प्राणयुक्ताः। गव्याः- चिद्रश्मिसम्पन्नाः। राधांसि- संसिद्धीः। गवाश्वधनानि वा। सूरयः- विद्वांसः। भजन्त- ददुः। तेभ्यः। सुजाते। अश्वसूनृते। उषः मघोनि। द्युम्नम्- ज्योतिष्मत्। बृहत्- महत्। यशः। आवह- प्रापय ॥७॥

उत नो गोमतीरिष आ वहा दुहितर्दिवः।

साकं सूर्यस्य रश्मिभिः शुक्रैः शोचद्भिरर्चिभिः सुजाते अश्वसूनृते॥ ५.०७९.०८

सुजाते। अश्वसूनृते। दिवः दुहितः। नः- अस्मभ्यम्। शुक्रैः। शोचद्भिः अर्चिभिः- प्रकाशयुक्तैः। सूर्यस्य रश्मिभिः- चिद्रश्मिभिः। साकम्- सार्धम्। गोमतीः- उदकयुक्ताः। मूलशक्तिधारायुता इति भावः। इषः- सदिच्छाः। आ वह- प्रापय ॥८॥

व्युच्छा दुहितर्दिवो मा चिरं तनुथा अपः।

नेत्त्वा स्तेनं यथा रिपुं तपाति सूरो अर्चिषा सुजाते अश्वसूनृते॥ ५.०७९.०९

सुजाते। अश्वसूनृते। दिवो दुहितः। व्युच्छ- तमो विवासय। अपः- मूलशक्तिधाराः प्रति। मा चिरं तनुथाः- मा विलम्बं कृथाः। यथा। स्तेनम्- दस्युम्। रिपुम्- शत्रुम् तथा। न। त्वा- त्वाम्। सूरः- सूर्यः। तपाति- तप्यात्॥९॥

एतावद्वेदुषस्त्वं भूयो वा दातुमर्हसि।

या स्तोतृभ्यो विभावर्युच्छन्ती न प्रमीयसे सुजाते अश्वसूनृते॥ ५.०७९.१०

एतावत्- एवम्। वा। उषः। त्वम्। भूयः- इतोप्यधिकं वा। दातुमर्हसि। विभावरि। उच्छन्ती- विवासयन्ती। स्तोतृभ्यः। न। प्रमीयसे- हंसि॥१०॥